अनन्य भक्त, महावीर : श्रीहनुमान

परिचय : मॉर्गन हूपर द्वारा लिखित

गुरुदेव सिद्धपीठ और श्री मुक्तानन्द आश्रम की पवित्र भूमि व मन्दिरों में भगवान श्रीराम के श्रेष्ठ शिष्य श्रीहनुमान की मूर्तियाँ सुशोभित हैं। हनुमान जी के पराक्रमी और महाबलशाली स्वरूप को व्यक्त करने के लिए बनाई गई इन मूर्तियों में उन्हें ताड़ासन में दर्शाया गया है। उनकी अतुलित बलशाली काया, शान्त और सरल है; और बड़ी सतर्क व चंचल-सी है उनकी लम्बी पूँछ तथा उनके दाहिने कन्धे पर सहजता से रखी है उनकी गदा। ऐसा प्रतीत होता है कि उनकी प्रेमल, कल्याणकारी दृष्टि क्षितिज की ओर होने के साथ-साथ उन साधकों पर भी पड़ रही है जो अचरज से उन्हें निहार रहे होते हैं। हनुमान जी से मिलना, भगवान के अनन्य भक्त, शूरवीर योद्धा और सबसे विनम्र सेवक के दर्शन करना है।

सिद्धयोग पथ पर श्रीहनुमान का आवाहन संरक्षण, पराक्रम और आशीर्वादों की प्राप्ति के लिए किया जाता है। श्रीहनुमान को अपने अनुकरणीय सद्गुणों के लिए भी पूजा जाता है। वीरता, सेवा, उदारता, समर्पण, विनोदप्रियता, प्राचीन शास्त्रों का ज्ञान व स्थितप्रज्ञा—उनके देदीप्यमान अनुकरणीय गुणों में से ये कुछ गुण हैं। सबसे अधिक महत्त्व की बात यह है कि हनुमान जी को गुरुभक्ति और गुरुनिष्ठा का मूर्तरूप माना जाता है।

पवनसुत हनुमान, भारत के प्राचीन महाकाव्य, रामायण में मुख्य भूमिका निभाते हैं। रामायण वह कथा है जिसमें भगवान श्रीराम की जीवन-लीलाओं का और इस धरा पर धर्म की पुनःस्थापना करने के उनके संकल्प तथा कार्य का वर्णन है। इस कथा में भगवान श्रीराम अपनी भार्या, देवी सीता को दुराचारी राक्षस, रावण के चंगुल से छुड़ाने जाते हैं और इस यात्रा के दौरान प्रभु श्रीराम की भेंट, वानरश्रेष्ठ श्रीहनुमान से होती है। अतुलित बल के स्वामी, इस पराक्रमी वानर के पास ऐसे-ऐसे दुर्गम कार्यों को करने की सामर्थ्य है कि कभी-कभी वे स्वयं भगवान श्रीराम को भी आश्चर्य में डाल देते हैं। हनुमान जी महाबलशाली और फुर्तीले हैं, वे एक ही छलाँग में कितने ही योजन पार कर सकते हैं और कोई भी वांछित रूप या आकार धारण कर सकते हैं।

प्रभु श्रीराम से भेंट होने पर हनुमान जी तत्क्षण अपने स्वामी को पहचान जाते हैं और जब उन्हें पता चलता है कि देवी सीता का अपहरण हो गया है तो वे सीता जी को ढूँढ़ निकालने का प्रण लेते हैं। हनुमान जी की भक्ति से प्रसन्न हो, भगवान राम उन्हें देवी सीता की खोज करने भेजते हैं। अन्ततः, देवी

सीता उन्हें लंका द्वीप में स्थित रावण की एक वाटिका में मिलती हैं। अपने आस-पास उपस्थित असंख्य राक्षसों से भयभीत हुए बिना, हनुमान जी देवी सीता से प्रार्थना करते हैं कि वे उन्हें सभी संकटों का सामना करने और उन्हें अपनी पीठ पर बैठाकर वहाँ से सुरक्षित ले जाने की अनुमति दें। देवी सीता इस प्रस्ताव को विनम्रतापूर्वक अस्वीकार कर देती हैं, क्योंकि वे जानती हैं कि भले ही वे संकट में हों, किन्तु कुछ है जो इससे भी बड़े संकट में है और वह है समस्त मानवजाति में समरसता की पुनः स्थापना। इसका एकमात्र उपाय है कि भगवान राम युद्ध में रावण का सामना कर उसे पराजित करें।

हनुमान जी अपने भगवान राम और सीता जी, जिन्हें वे 'माता' कहकर सम्बोधित करते हैं, की हर इच्छा को पूरा करते हैं। इस प्रकार वे न केवल अपने बल का परिचय देते हैं, अपितु भगवान के प्रति अपनी विनम्रता और स्वामीभक्ति को भी दर्शाते हैं। वानरसेना के सेनापति के रूप में सेवा अर्पित करते हुए हनुमान जी राक्षसकुल पर विजय प्राप्त करते हैं। भगवान राम व उनके अनुज लक्ष्मण, रावण को परास्त करते हैं, देवी सीता उन्हें वापस मिल जाती हैं और वे शान्ति की पुनः स्थापना करते हैं।

हनुमान जयन्ती यानी हनुमान जी का जन्मोत्सव, हर वर्ष हिन्दू पंचांग के अनुसार वर्ष के प्रथम मास चैत्र की पूर्णिमा को मनाया जाता है। पश्चिमी कैलेन्डर के अनुसार यह पर्व अकसर अप्रैल माह में आता है। हनुमान जयन्ती पर पारम्परिक रूप से श्रीहनुमान चालीसा का और सुन्दरकाण्ड का पाठ किया जाता है। सुन्दरकाण्ड रामायण का वह अध्याय है जिसमें श्रीहनुमान व उनकी उपलब्धियों का वर्णन है; इसके साथ ही, उनकी वीरता का गुणगान करते भक्तिपूर्ण स्तोत्र गाए जाते हैं और आरती व अन्य पूजाएँ अर्पित की जाती हैं। भक्तजन उनकी वीरगाथाएँ सुनाते हैं और बच्चे चेहरे पर उनका मुखौटा लगाकर महावीर योद्धा होने का अभिनय करते हैं। इस उत्सव पर उपवास रखा जाता है और उसके बाद स्वादिष्ट भोजन का आनन्द लिया जाता है; मन्दिरों में बूँदी के लड्डुओं का प्रसाद बाँटा जाता है।

© २०२२ एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।